

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये अशीतितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে অশীতিতমং দশকম্ ॥

স্যমন্তকোপাখ্যানম্

সত্রাজিতস্কুমথ লুঙ্করদর্কলঙ্কং

দির্যং স্যমন্তকমণিং ভগরন্নযাচীঃ।

তৎকারণং বহুরিধং মম ভাতি নুনং

তস্যাত্মজাং ত্ৱয়ি রতাং ছলতো রিরোঢ়ুম্ ॥ 80.1 ॥

অদত্তং তং তুভ্যং মণিররমনেনান্নমনসা

প্রসেনস্তদ্ধাতা গলভুরি রহন্ প্রাপ মৃগযাম্।

অহ্নেনং সিংহো মণিমহসি মাংসভ্রমরশাৎ

কপীন্দ্রস্তং হংরা মণিমপি চ বালায দদিরান্ ॥ 80.2 ॥

শশংসুঃ সত্রাজিদিগিরমনু জনাস্ত্ৰাং মণিহরং

জনানাং পীযুষং ভরতি গুণিনাং দোষকণিকা।

ততঃ সর্ৱজ্ঞোহপি স্বজনসহিতো মার্গণপরঃ

প্রসেনং তং দৃষ্টৱা হরিমপি গতোহভূঃ কপিগুহাম্ ॥ 80.3 ॥

ভরন্তমরিতর্কযন্নতিরযাঃ স্বযং জাম্বরান্

মুকুন্দশরণং হি মাং ক ইহ রোদ্ধুমিত্যালপন্।

রিভো রঘুপতে হরে জয জযেত্যালং মুষ্টিভি -

শ্চিরং তৱ সমর্চনং ব্যধিত ভক্তচুডামণিঃ ॥ 80.4 ॥

বুধ্ৱাহথ তেন দত্তাং

নররমণীং ররমণিং চ পরিগৃহ্নন্।

अनुगृह्णन्मुमागाः

सपदि च सत्राजिते मणिं प्रादाः ॥ 80.5 ॥

तदनु स खलु ब्रीलालोलो रिलोलरिलोचनां  
दुहितरमहो धीमान् भामां गिरैर परार्पिताम्।  
अदित मणिना तुभ्यं लभ्यं समेत्य भवानपि  
प्रमुदितमनास्तस्यैरादान्मणिं गहनाशयः ॥ 80.6 ॥

ब्रीलाकुलां रमयति र्वयि सत्यभामां  
कौन्तेयदाहकथयाथ कुरुन् प्रयाते।  
ही गान्दिनेयकृतर्मगिरा निपात्य  
सत्राजितं शतधनुर्मणिमाजहार ॥ 80.7 ॥

शोकां कुरुनुपगतामरलोक्य कान्तां  
हंरा द्रुतं शतधनुं समहर्षयस्ताम्।  
रत्ने सशङ्क ईर मैथिलगेहमेत्य  
रामो गदां समशिशिक्षत धार्तराष्ट्रम् ॥ 80.8 ॥

अक्रुर एष भगवन् भरदिच्छयैर  
सत्राजितः कुचरितस्य युयोज हिंसाम्।  
अक्रुरतो मणिमनाहतवान् पुनस्तुं  
तस्यैर भूतिमुपधातुमिति ब्रूवन्ति ॥ 80.9 ॥

भङ्गस्तुयि स्थिरतरः स हि गान्दिनेय -  
स्तस्यैर कापथमतिः कथमीश जाता।  
रिञ्जानवान् प्रशमरानहमित्युदीर्णं  
गर्भं ध्रुवं शमयितुं भरता कृतेर ॥ 80.10 ॥

यातं भयेन कृतर्मयुतं पुनस्त -  
माहूय तद्विनिहितं च मणिं प्रकाश्या।

तत्रैर सुब्रतधरे रिनिधाय तुष्यन्  
भामाकुचान्तरशयः परनेश पायाः ॥ 80.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥